व्यापार के पर्यावरणीय उतरदायित्व

एक व्यवसायी पर्यावरण को ‘मुफ्त का अच्छा’ के रूप में देखने का आदि रहता है. प्रकृति के संसाधन-हवा,पानी,भूमि,पेड़-पौधे, जानवर,खनन इत्यादि को व्यवसायी जिस रूप में इस्तेमाल करना चाहता है उस रूप में उपलब्ध रहते हैं. उदाहरण केलिए, कारखाने और फैक्ट्रियों में अपने उत्पादन के अवशिष्ट डालती हैं या हवा का उसके पर्यावरण पर पड़नेवाले प्रभावों को जाने बिना उपयोग करते हैं. प्राकृतिक भूमि का क्षेत्र जनसंख्या और उद्धोगों के अनुपात में काफी कम है. इसलिए, पारिस्थितिकी तंत्र( सजीव व निर्जीव सभी वस्तुओं कुल सम्बन्धात्मक जीवन)पर पड़नेवाले प्रभावों के भर को नजरअंदाज करना आसन है. प्राकृतिक संसाधनों के प्रदुषण और ह्रास इस स्तर तक पहुँच गया है कि हम इसकी और अनदेखी नहीं कर सकते.

हाल के औधोगिक समाजों में पर्यावरणविदों और व्यवसायिक समुदाय के बीच हो रहे संघर्षों के कारण पारिस्थितिकी चेतना का विकास हुआ है. कुछ पर्यावरणविद तर्क देते हैं कि प्राकृतिक पर्यावरण की देखभाल करना हमारा नैतिक दायित्व है. पर्यावरण को प्रदूषित या विनाश करना अन्यायपूर्ण होगा क्योंकि यह प्राकृतिक वस्तुओं के प्राकृतिक अधिकार का उल्लंघन है और निर्जीव चीजों का अपमान है.दूसरे विश्वास करते हैं कि पर्यावरण गुणवत्ता को बनाए रखना चाहिए क्योंकि व्यक्ति को स्व्च्छ,साफ-सुथरे पर्यावरण में रहने व जीने का अधिकार है. यह दृष्टि वर्तमान मानवीय सत्ताओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा पर केन्द्रित है. किन्तु कुछ लोग पर्यावरण संरक्षण के दायित्व को भविष्य की पीढ़ी की विरासत के रूप में देखने पर जोर देते हैं.

प्रश्न पर्यावरण के सम्बन्ध में व्यवसायिकों के दायित्व तक विस्तारित है. उतरदायित्वपूर्ण व्यवहार का सबसे अच्छा तरीका क्या है? सरकार पर्यावरण के उपयोग को नियंत्रित करने के प्रयास करती है. और व्यवसायिकों को पारस्थितिकी नुकसान की भरपाई करने की कीमत में हिस्सेदार बनने केलिए दबाव डालती है. व्यवसायी पर्यावरण संरक्षण मापदन्डों को अपने हितों केलिए धमकी के रूप में देखते हैं.वे यह तर्क देते हैं कि सख्त पर्यावरण नियमन जनता के हित में नहीं है क्योंकि इसका परिणाम आर्थिक विकास को घटाने और बेरोजगारी को बढ़ाने के रूप में सामने आयेगा. इस हिसाब से प्रदुषण नियन्त्रण का उच्चा मूल्य और संशाधनों का संरक्षण व्यवसायों की लाभ आधारित उत्पादन की क्षमता पर चोट होगी. जिसका परिणाम फैक्ट्रियां- कारखाने बंद होने, छटनी करने, सामुदायिक अस्थिरता और आर्थिक तंगी होगा.

कुछ लोगों का विश्वास है कि पर्यावरण के संकट को हल करने केलिए व्यवसायिकों के अधिकारों और जनता के हितों जो मूल्यों की एक लम्बी श्रंखला रखते हैं, के बीच एक संतुलन दृष्टिगत समाधान होना चाहिए. क्या जानवर,पेड़-पौधे और निर्जीव प्राकृतिक संसाधन नैतिक दर्जा रखते हैं जिनको नुकसान पहुँचाना या उनका दोहन करना गलत होगा? यदि ऐसा है तो क्या उन्हें सुरक्षा के अपने अधिकारों को स्थापित करने के तरीके के रूप में कानूनी रूप से खड़ा होना चाहिए? यह उसी तरह का प्रश्न है जैसे गर्भपात का जिसमें भ्रूण स्वयं का कोई निर्णय नहीं होता.

इस सम्बन्ध में पहला लेख जिसमें क्रिस्टोफर इस अवधारणा को प्राकृतिक वस्तुओं और मानवेत्तर सताओं के कानूनी अधिकारों तक विस्तृत करते हैं. उनका तर्क है कि इस तरह की वस्तुएं और सत्ताएँ अपने हितों की रक्षा के संरक्षण के रूप में देखी जानी चाहिए और इसकी तुलना अक्षम व्यक्तियों के क़ानूनी संरक्षण के प्रस्ताव से करते हैं.

पर्यावरण संरक्षण की दूसरी दृष्टि ‘बाह्यता’ की अवधारणा पर देते हैं. अर्थशास्त्री इस शब्द का प्रयोग सार्वजनिक सामाजिक मूल्य के बीच फर्क को दर्शाने में देखते हैं. उदाहरण केलिए, एक उद्धोग जो पानी के संसाधनों को प्रदूषित करता है, उसकी पुनर्बहाली पर आनेवाले खर्चे को कीमत बढ़ा कर जनता पर डालता है या पीने के पानी की गुणवत्ता घटा देता है. उधोग का लाभ अन्यायपूर्ण है क्योंकि बाह्य खर्चे उत्पादन की कीमत में खर्च नहीं किये गए थे.कुछ सिद्धांतकार व्यवसायिकों की आंतरीकी पर जोर देते हैं. जिसमें प्रदुषण की का बोझ जनता पर डालने की बजाये खुद वहन करे. उनका तर्क है कि यदि उधोग बही कीमत पहले ही अपने हिसाब में जोड़ लेती तो वे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और नुकसान को कम करने में एक आर्थिक प्रोत्साहन रखते. इसके समर्थक यह मानते हैं कि यह दृष्टिकोण क्षतिपूर्ति न्याय और प्रतिशोधात्मक न्याय की जरूरतों को पूरा करता है. ***क्षतिपूर्ति न्याय*** की मांग है कि हानि उठानेवाले पक्ष को जिसने हानि पहुंचाई है वह उस हानि की भरपाई करे. यदि उधोग प्रदुषण नियन्त्रण केलिए कीमत चुकाता है, पड़ौसी समुदाय उसे लाभ उठाता है तो वे उस हानि की क्षतिपूर्ति करते हैं जिन्होंने प्रदुषण के कारण हानि उठाई थी. ***प्रतिशोधात्मक न्याय*** मांग करती है कि हानि की भरपाई करने केलिए होनेवाले भार को उन लोगों पर डालना चाहिए जो उसके लिए जिम्मेदार हैं या जिसका लाभ उन्होंने ने उठाया है. कम्पनी के शेयरधारक और उपभोक्ता जिन्होंने ने कम उत्पादन कीमत से लाभ उठाया किन्तु प्रदुषण को मिटाने पर उसका संतुलन करने की कीमत का उन्होंने आंतरिकीकरण किया है.

***मूल्य-लाभ विश्लेषण*** का कभी-कभी इस्तेमाल प्रदुषण नियंत्रण के मापदंडों के मूल्यांकन केलिए किया जाता है. जो पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान का उपयोगितावादी दृष्टिकोण है. उदाहरण केलिए, एक कंपनी जो दो हजार की कीमत का प्रदुषण फैला रही है, और उसको कम करने वाले उपकरण की कीमत एक हजार रुपया है तो उपयोगितावादी दृष्टि साफतौर पर यह कहेगी कि उपकरण लगा लो. यद्दपि, यदि आंकड़ा उल्टा होता तो लागत प्रभावी नहीं होगी. समस्या प्रदुषण नियन्त्रण के लाभों के सटीक मानदंडों में है. प्रदुषण खत्म करने के लाभ का रूप उस हिस्से की जोखिम से निकलता है जो प्रदुषण के कारण हैं. जोखिम को कैसे आंका और मूल्यांकन किया जाये? उदाहरण केलिए, बिजली उत्पादन केलिए कोयले को जलाने से जनता के स्वास्थ्य को क्या जोखिम है और कैसे उस जोखिम को न्यूक्लियर पॉवर प्लांट से होनेवाली जोखिम सर तुलना की जाये?

उभरते तकनीकी युग में पर्यावरण के संभावित प्रभाव और अनुचरी जोखिम के बारे में भविष्यवाणी करना कठिन है? *मूल्य-लाभ विश्लेषण* में तकनीकी समस्या मापन की है. इसके अलावा, मूल्य-लाभ विश्लेषण के कारकों का परिमाणक आँकना भी आसान नहीं है. उदाहरण केलिए, मानव जीवन.स्वास्थ्य या मानवेत्तर प्राणियों का क्या मूल्य हो सकता है? क्या स्वच्छ पर्यावरण के सामाजिक और सौंन्द्रियात्मक मूल्य की गणना की जा सकती है?

समस्या के उपयोगितावादी दृष्टिकोण के अनुसार, कुछ लेखकों का मानना है कि प्रदुषण पर पूरी तरह से रोक लगा देनी चाहिए और कुछ तकनीकी पर भी, जिसकी कोखिम के परिणामों की भरपाई नहीं की जा सकती. यद्धपि प्रदुषण के प्रभावों को कम करने केलिए बुनियादी परिवर्तन हमारे सामाजिक बर्ताव में करने की जरूरत है. पर्यावरण को प्रदूषित करने केलिए कम्पनियों की निंदा करना आसान है जबकि दीर्घकालीन समाधान इस चीज को देखने की मांग करता है कि हम सभी इसके हिस्से होते हैं.

दूसरे लेख में डेविड आर. फ्रे व्यक्तिगत मूल्य और सांगठनिक व्यवहार के बीच पाये जानेवाले अंतर का परीक्षण करते हैं. लेखक देखते हैं कि व्यक्ति जो पर्यावरण प्रदुषण का राग अलापते हैं वे उस संगठन/ संस्थान/कम्पनी में जानबूझकर भाग लेते हैं जो प्रदुषण का कारण है. फ्रेस कहते हैं कि हमें संगठनों में हमारी भागीदारी के सामाजिक परिणामों को देखने की जिम्मेदारी के अहसास को बढ़ाना चाहिए.